

समकालीन समय में अर्थ की प्रकृति

The nature of meaning in contemporary times
Reflections of an aspiring story-teller

Prashant Sachan

Guide : Prof. Raja Mohanty

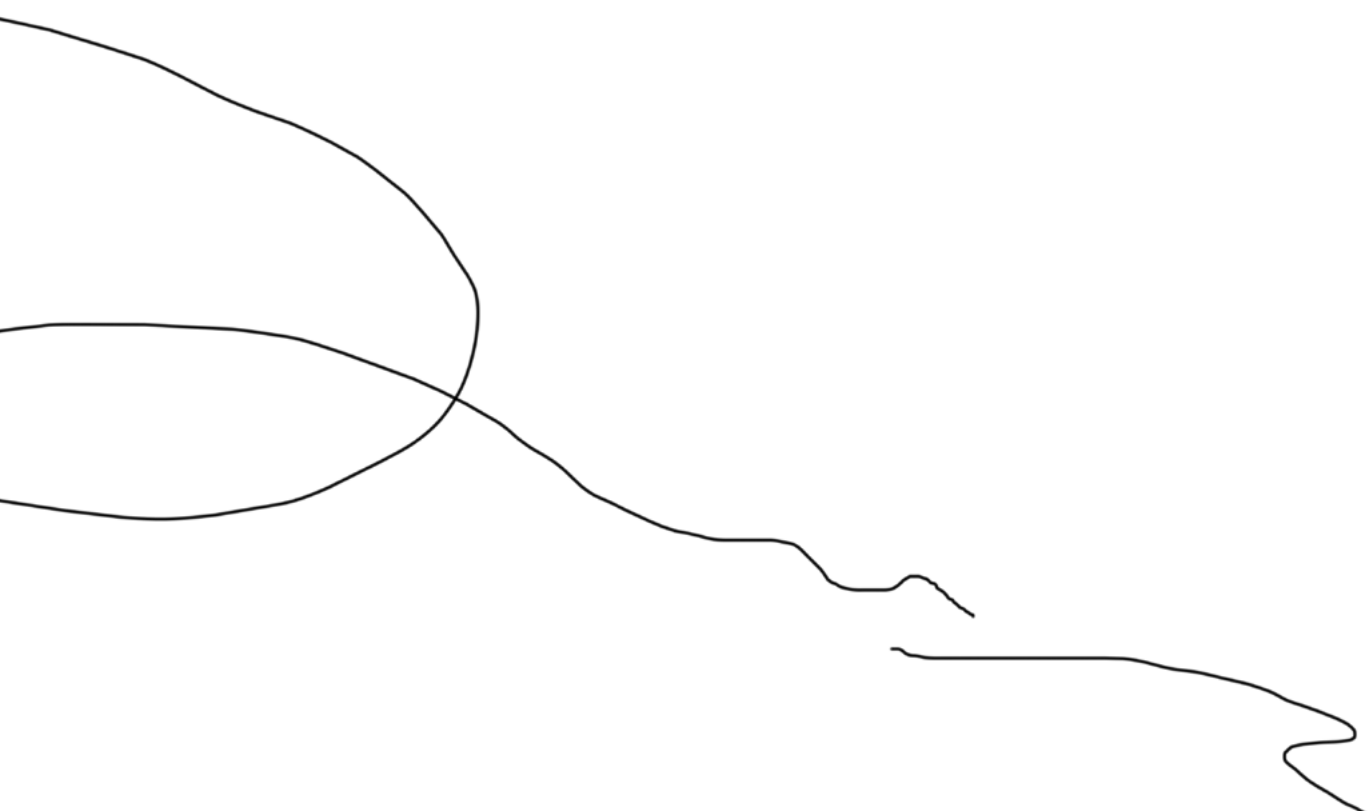
“Remember on this one thing, said Badger. The stories people tell have a way of taking care of them. If stories come to you, care for them. And learn to give them away where they are needed. Sometimes a person needs a story more than food to stay alive. That is why we put these stories in each other’s memories. This is how people care for themselves. ”

– Barry Lopez, Crow and Weasel

“At times, I lean back on that rickety chair in the terrace
with the intent to draw beads of words on that weak thread of feelings..

At times, I fail miserably. Rather say, I fail most of the times.
I am not that afraid of failing to express,
I am more afraid of that wall within me that stops me to say.”

This project is an attempt to address that urge to reflect upon those stories
and emotions that I experience when I come across various facets of life.



किस्म-किस्म की जिन्दगी

चारों तरफ कहानियों के लच्छे, कुछ सुलझे से-कुछ उलझे से
किस्म-किस्म के लच्छे, ऊनी-सूती-रेशमी-गाँठ वाले भी

कभी दोनों हाथों की अंगुलियों में फंसा के धागों की रंगोली..
हाँ, उन धागों की की बेरंग रंगोली बनाई है
रंग होते हैं उनमें, बस इन सयानी आँखों से दिखते नहीं

He believed he was free,
All those recognitions and awards-
he considered them to be his greatest assets in life.

And then one day, his belief got shattered.

Documents

दस्तावेज़



Documents

दस्तावेज़

जेब में हाथ डाला तो एक पल के लिए ठहर सा गया,
चाभी कहाँ है?
इतने में हाथ दूसरी जेब में गया, पीछे की जेब खंगाली
चाभी गयी तो गयी कहाँ?

ऑफिस का लाकर.. घर की चाभियाँ..
उसमें अलमारी की चाभी थी, सारे दस्तावेज़..

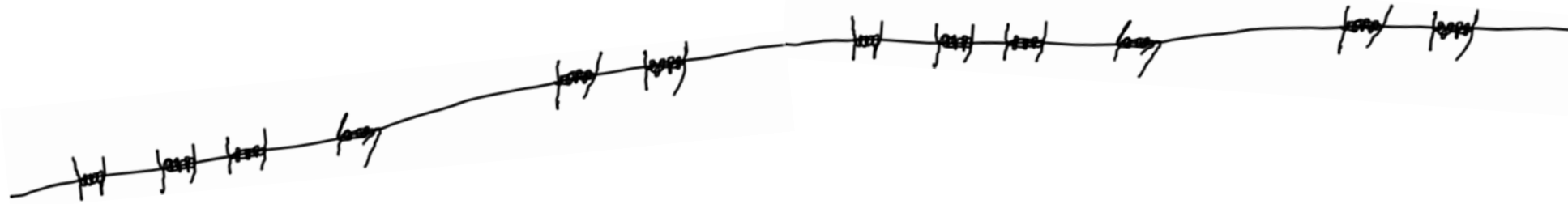
एक अजीब सी बात अभी-अभी ज़हन में आई-
हाँ, अजीब सी ही बात थी ये-
साठ रूपए के अलीगढ़ी ताले की १० ग्राम की वो चाभी
वो १०-१० ग्राम की पांच चाभियाँ,
चाभियाँ जो एक छल्ले में फँसी थीं,
मेरी जिंदगी के कई पहलु हैं जो उन चाभियों में फँसे थे।

बचपन से जो मिला वो समेटता आया हूँ,
जो भी थोड़ा-बहुत किया है वो स्याही की डोरियों से कागज़ पर लपेटता आया हूँ।

कागज़ों का, दस्तावेज़ों का एक गट्टा बन गया है,
एक चाभी तो उस गट्टे को संभालने के लिए उस गुच्छे में सहेजता आया हूँ।

..

एहसास हुआ कि मैं कुछ दस्तावेज़ों में, चाभियों में सिमित होकर रह गया हूँ।



He got lost somewhere
running hard to achieve something
something he was not sure of
something which was indefinite,
an indefinite entity which will lose
its relevance with time.

One fine evening,
he realizes all what he lost-
all what he lost in that race.

The Lines in-between

लकीरें

The Lines in-between

लकीरें

एक रोज़ सूट-बूट के लिफाफे के बाहर थोड़ा झाँक कर देखा मैंने-
देखता क्या हूँ कि मेरी माँ अपने चेहरे पे कुछ अजीब सा भाव लिए खड़ी थी
टकटकी लगाये कुछ तो मेरे परे देख रही थी वो, थोड़ा खुश तो थी
पर एक अजीब सी लकीर माथे पर बाँध रखी थी उसने

थोड़ा पास जाके पूँछा मैंने, “माँ हुआ क्या”, बोली वो कि कुछ नहीं
कर उसके सिर पर रख माथे को चूमने चला तो देखता हूँ कि लकीरें काफी गहरी हैं
इस बीच अचानक ही बोल उठी वो - “मुझे ना अंग्रेजी सीखनी है”
ठहर कर फिर से बोली वो- “कई बार फ़ोन पर तू जब कुछ जल्दी में बोल जाता है,
एकदम से वो दूरी एहसास उमड़ता है और शिथिल सा कर जाता है,
लगता है एक लकीर सी है कहीं, मुझे ना अंग्रेजी सीखनी है”

ये सूट बूट का लिफाफा और वो गहरी सी लकीरें
वो लकीरें जो इस लिफाफे के तीखे कोनों से मैंने जिंदगी कि सतह पर खींची थीं

ये लिफाफे में सिमटे हुए अरमानों की दौड़, ये संवेदना समेट कर कागज़ बनाने कि दौड़
हाँ वक्रत थोड़ा बदल गया है और फिर थोड़ा सा मैं भी बदल गया हूँ



5th cross, 8th Street,
Old Town, Somewhere in India

There lived a man.. an old man,
who used to put letters every month in the post box
located at the corner of the street.

His wife used to smile at him from the balcony of
their apartment while he was putting letters in that
box of hope.

The abandoned letter box

परित्यक्त लेटर बॉक्स

The abandoned letter box

परित्यक्त लेटर बॉक्स

खत आज भी पड़े हैं
उस बंद डब्बे में

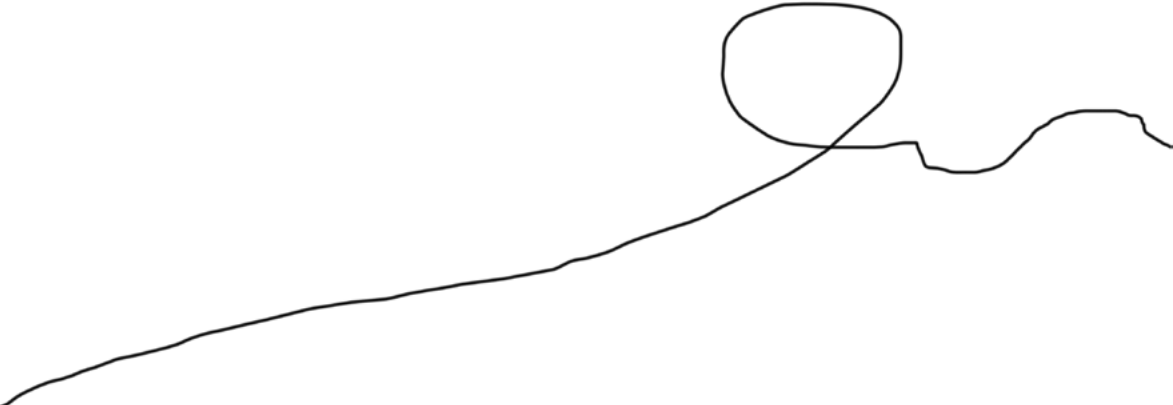
तेरी माँ को लगता है
कि अब तक मिल चुके होंगे तुझे वो
कि व्यस्त होगा तू कहीं

इतना व्यस्त कि सालों से जवाब नहीं आया तेरा
पर कोई बात नहीं, कम से कम उसकी बात तो तुझ तक पहुँचती है
संतोष है उसे..

उसे आज तक नहीं पता कि-
तू इतना खफा था हमारी लाचारी से
कि बिन पता दिए ही परदेस चला गया तू..

बस डर इतना सा है-
कि कल जब म्युनिसिपालिटी वाले
उस लाल डब्बे को उखाड़ फेंकने आएँगे
सड़क पर पड़ी हुई कागज़ पर लिखी उस बिखरी आस-
को कहीं तेरी माँ देख न ले..

Love exists or it doesn't?
It does, and it doesn't.



I met her in a tea-shop,
the tea-shop on that infamous street

She barely said anything,
no.. she said everything.

Merchant of Love- I

प्यार के व्यापारी- १

जज़्बातों की छुवन के एहसास की जुस्तजू अब मिट चुकी है,
मुर्दों से सम्भोग का नया दौर अब रंवा है



The barter system-
He needed love,
she needed bread.

Neither he could extract love by rubbing
against her body, nor she could swallow in
that loaf of bread.

Merchant of Love- II

प्यार के व्यापारी- २

Needs

ज़रूरतें

लोगबाग मुहब्बत से महरूम हैं
और वो दाने-दाने से

वस्तु विनिमय प्रणाली भी क्या खूब लगी यहाँ,
वो छोटी-छोटी मुहब्बत की पुड़ियों के बदले नोट पे नोट देता गया

दुर्भाग्य तो देखो दोनों का,
न इन एक-डेढ़ घंटे के सेशन में मुहब्बत खरीद पाया वो
और दर्द के मारे एक दाना भी निगल न पाई वो

लोगबाग महरूम ही लौटे इस गली से
कोई मुहब्बत खरीद न पाया और कोई इस भूख का इलाज़

There was pain,
there were needs,
there was a body,
there was a mind as well.
There was a detachment,
and there was a long silence.

Surprisingly, at times-
she talked..
she talked to herself.

Merchant of Love- III

प्यार के व्यापारी- ३

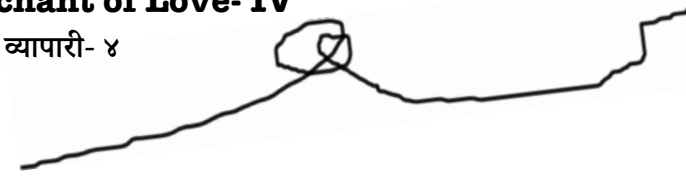


यूँ किशतों में मत मार मुझे
तू एक वार से काया खुदा कर दे
साँस फँसी है सालन से तन में
अब इसको रिहा कर दे

And she continued..

Merchant of Love- IV

प्यार के व्यापारी- ४



Broken wings

टूटे हुए पंख

जब उड़ती थी मैं,
जब इस आसमां में दूर कहीं निकल जाती थी मैं,
तब मेरे आशियाने में तू रोज़ आता था,
मेरे साथ बातें करता हँसता-गुनगुनाता था
सब कहते थे तब कि मैं इस आसमां की रानी हूँ

आज थोड़ा जो उड़ ना पाई, आज थोड़ा जो मैं लड़खड़ाई
तू तो मेरी ओर देखता ही नहीं,
मैं फिर से जीतूंगी- ये लफ़्ज़ तू अब बोलता ही नहीं

पंख टूटे थे मेरे उस दिन,
और आज मेरा हौसला टूट गया है

और आज तेरे अलफ़ज़ों से कहीं मैं टूट सी गयी हूँ

Love exists?

They would be in their 60s.
She was a house-maid.. yes, she was.
He was daily-wage labourer.. probably.

In that packed compartment,
Looking out of the window, she was struggling
hard to keep her tired eyes open and he was
struggling hard to keep his eye-lids closed.

And then, she cradled his hand into hers for a
moment and then took them off,
he looked at her from the corner of his eyes, took
a deep breathe and gently closed his eyes again.

Threads of hope

आशाओं के धागे

Threads of hope

आशाओं के धागे

इस तंग बोगी में
अपनी एक छोटी सी दुनिया बसाये हुए
तुमसे बेखबर, अलग दूर और उसके करीब

उसकी अलसायी आँखों में डूबा हुआ
वो दिन भर चली तकरार को इश्क में घोलता हुआ
दर्द से दूर, फिकर से दूर- सपनों में उलझता हुआ, सुलझता हुआ

“I leaned back on that rickety chair in the terrace
with the intent to draw beads of words on that weak thread of feelings..

I failed miserably at times. Rather say, I failed most of the times.
I was afraid of failing to express,
I was more afraid of that wall within me that always stopped me to say..
But, I tried and I will keep trying.”

This project was an attempt to reflect upon those stories and emotions that I experienced
when I came across various facets of life.

Approval Sheet

Design Research Seminar entitled-

The nature of meaning in contemporary times

-Reflections of an aspiring story-teller

By: Prashant Sachan | 126330004

is approved in the partial fulfillment of the requirements
of the degree of Masters of Design.

Guide:

15 July, 2014
IDC, IIT Bombay